Sub:- Philosophy
Class- B.A. Part-II (Hons)
Paper-IV

लाइबनीज का चिद्बिन्दु सिद्धान्त (प्रथम भाग)
(Leibniz's Doctrine of Monads) (First Part)

लाइबनीज ने द्रव्य की संख्यात्मक अनेकता को माना है और कहा है कि द्रव्य कोई एकता नहीं बल्कि शक्ति है तथा जिसे उन्होंने चिद्बिन्दु की संज्ञा दी है। चिद्बिन्दु संख्या में अनेक है जिनकी व्याख्या लाइबनीज ने स्वतंत्र एकता सिद्धान्त (The Principle of Individuality) के आधार पर की है। उनका कहना है कि जिस प्रकार गणित में प्रत्येक संख्या स्वतन्त्र होती है उसी प्रकार हर चिद्बिन्दु स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर है।

चिद्बिन्दु इस अर्थ में स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर है कि उनमें जो भी परिवर्तन होता है वह आन्तरिक होता है न कि बाह्य। चिद्बिन्दु अपनी आन्तरिक विशेषताओं के कारण ही परिवर्तित होते है। लाइबनीज ने कहा है कि

चिद्बिन्दु सरल (simple) हैं और उनकी सरलता इस अर्थ में है कि वे अविभाज्य है, पर उनकी अविभाज्यता Democritus के परमाणु बिन्दुओं की तरह नहीं जो, यथार्थ में तो विभाज्य है पर 'अविभाज्य' मालूम पड़ते हैं।

चूंकि चिद्बिन्दु अविभाज्य है इससे यह भी सिद्ध होता है कि वे अविनाशी है। क्योंकि विनाश केवल उन्हीं वस्तुओं का सम्भव है जिनका विभाजन किया जा सके। इसे एक उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है - मान लें कि हम एक कुर्सी को अलग-अलग भाग में विभाजित कर कर देते है जैसे उसके पाये, सीट, बाँह इत्यादि। अब हम उस सीट या पाये को तो कुर्सी नहीं कह सकते अर्थात कुर्सी के विभाजित अंगों को कुर्सी नहीं कहा जा सकता/जबके हम कुर्सी को अलग कर देते है तो कुर्सी नाम की वस्तु का अस्तित्व नष्ट हो जाता है अतः हम कह सकते है कि जिस वस्तु का विभाजन हो सके वो नाश का विषय है। पर चिद्बिन्दु अविभाज्य है इससे यह सिद्ध होता है कि यह अविनाशी है। लाइबनीज ने यहाँ यह भी कहा है कि इन अविनाशी चिद्-बिन्दुओं का यदि ईश्वर चाहे तो विनाश कर सकता है। लाइबनीज ने इन चिद्बिन्दुओं में

जो सर्वश्रेष्ठ अर्थात परम चिद्विन्दु (Queen monad or God monad) है उसे ही ईश्वर कहा है और बताया है कि यही ईश्वर चिद्विन्दु अन्य सारे चिद्विन्दुओं का निर्माता है।

लाइबनीज यह मानते हैं कि जितने भी चिद्विन्दु हैं उनमें गुणात्मक अन्तर है। विश्व की प्रत्येक वस्तु यहाँ तक की एक ही वृक्ष के सभी पत्ते अलग होते हैं। एक ही नदी की पानी की बूंदें, एक ही दीपक से निकलने वाली दीप एक दूसरे से भिन्न हैं तथा एक दूसरे से पृथक और स्वतंत्र है। लाइबनीज ने कहा है कि क्या कारण है कि एक ही माता-पिता के दो पुत्रों में अनेक विभिन्नतायें होती है जबकि वे समान वातावरण पलते हैं, इसका मूल कारण यह होता है कि वे चिद्विन्दु जिनसे उन दोनों बच्चों का निर्माण हुआ है उनमें गुणात्मक भेद है।

चिद्विन्दुओं की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे खिड़कीरहित (windowless) है। उनमें कोई भी ऐसा मार्ग नहीं है जिससे बाहर की कोई वस्तु उसमें प्रवेश कर सके या अन्दर से कोई भी वस्तु बाहर जा सके। लाइबनीज ने कहा है — "It has no window by which anything can enter or pass out."

लाइबनीज के इस मत के विरुद्ध एक आपत्ति की जा सकती है। यह कहा जा सकता है कि यदि चिद्बिन्दु खिड़कीरहित है और उसमें न तो कोई बाहर से आ सकता है और न बाहर जा सकता है तो फिर चिद्बिन्दुओं को एक दूसरे का ज्ञान कैसे होता है? लाइबनीज ने इस आपत्ति का उत्तर दिया है और समस्या के समाधान हेतु दर्पण का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनका तर्क यह है कि जिस प्रकार एक दर्पण खिड़कीरहित होता है पर उसके सामने यदि हम एक गुलाब या सेब रख देते हैं तो उसके अनुरूप दर्पण में गुलाब या सेब का प्रतिबिम्ब बनता है ठीक उसी प्रकार यद्यपि सारी वस्तुयें खिड़कीरहित चिद्बिन्दुओं से निर्मित हैं फिर भी उन्हें एक दूसरे का ज्ञान होता है।

लाइबीज के अनुसार प्रत्येक चिद्बिन्दु की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न है इसलिये हर चिद्बिन्दु पर दूसरे चिद्बिन्दुओं का पड़ने वाला प्रतिबिम्ब एक दूसरे से भिन्न होता है, यह कम स्पष्ट या अधिक स्पष्ट होता है। यह उसी प्रकार की बात है जिस प्रकार एक गंदे या धुंधले दर्पण में वस्तुओं का प्रतिबिम्ब गंदा या धुंधला दिखता है और साफ दर्पण में स्पष्ट और साफ।

फिर लाइबनीज के अनुसार प्रत्येक चिद्बिन्दु में दो विशेषतायें सामान्य रूप से निहित है जिसे उन्होंने चित्-शक्ति और प्रवृत्ति (Perception and appetion) कहा है। चित्-शक्ति चिद्-बिन्दुओं की वह विशेषता है जिसके कारण उन्हें बाह्य वस्तुओं का ज्ञान होता है। दूसरी ओर प्रवृत्ति उनकी वह विशेषता है जिसके कारण हर चिद्बिन्दु अपने को और विकसित करना चाहता है। किसी चिद्-बिन्दु में चित्-शक्ति अधिक होती है और किसी में कम। और यही कारण है कि उन पर पड़ने वाले दूसरे चिद्बिन्दुओं का प्रतिबिम्ब भी अधिक स्पष्ट या कम स्पष्ट होता है।

धन्यवाद

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.